

---

# Radhaparihara Stotram

---

## राधापरीहारस्तोत्रम्

---

### Document Information



---

Text title : Radhaparihara Stotram

File name : rAdhAparIhArastotram.itx

Category : devii, devI, brahmavaivartapurANa, stotra, rAdhA

Location : doc\_devii

Proofread by : PSA Easwaran

Description/comments : brahmavaivartapurANa | prakRRitikhaNDa | adhyAya 55/47-59||

Latest update : March 5, 2025

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

March 5, 2025

*sanskritdocuments.org*

---

## राधापरीहारस्तोत्रम्



कृष्णवक्षसि या राधा सर्वसौभाग्यसंयुता ।  
रासे रासेश्वरीरूपा वृन्दा वृन्दावने वने ॥ ४७ ॥  
कृष्णप्रिया च गोलोके तुलसीकानने तु या ।  
चम्पावती कृष्णसङ्गे क्रीडा चम्पककानने ॥ ४८ ॥  
चन्द्रावली चन्द्रवने शतशृङ्गे सतीति च ।  
विरजा दर्पहन्त्री च विरजातटकानने ॥ ४९ ॥  
पद्मावती पद्मवने कृष्णा कृष्णसरोवरे ।  
भद्रा कुञ्जकुटीरे च काम्या वै कम्यके वने ॥ ५० ॥  
वैकुण्ठे च महालक्ष्मीर्वाणी नारायणोरसि ।  
क्षीरोदे सिन्धुकन्या च मर्त्ये लक्ष्मीर्हरिप्रिया ॥ ५१ ॥  
सर्वस्वर्गे स्वर्गलक्ष्मीर्देवदुःखविनाशिनी ।  
सनातनी विष्णुमाया दुर्गा शङ्करवक्षसि ॥ ५२ ॥  
सावित्री वेदमाता च कलया ब्रह्मवक्षसि ।  
कलया धर्मपत्नी त्वं नरनारायणप्रभोः ॥ ५३ ॥  
कलया तुलसी त्वं च गङ्गा भुवनपावनी ।  
लोमकूपोद्भवा गोप्यः कलांशा रोहिणी रतिः ॥ ५४ ॥  
कला कलांशरूपा च शतरूपा शची दितिः ।  
अदितिर्देवमाता च त्वत्कलांशा हरिप्रिया ॥ ५५ ॥  
देव्यश्च मुनिपत्न्यश्च त्वत्कलाकलया शुभे ।  
कृष्णभक्तिं कृष्णदास्यं देहि मे कृष्णपूजिते ॥ ५६ ॥  
एवं कृत्वा परीहारं स्तुत्वा च कवचं पठेत् ।  
पुरा कृतं स्तोत्रमेतद्भक्तिदास्यप्रदं शुभम् ॥ ५७ ॥

एवं नित्यं पूजयेद्यो विष्णुतुल्यः स भारते ।  
जीवन्मुक्तश्च पूतश्च गोलोकं याति निश्चितम् ॥ ५८ ॥  
कार्तिकीपूर्णिमायां च राधां यः पूजयेच्छिवे ।  
एवं क्रमेण प्रत्यब्दं राजसूयफलं लभेत् ॥ ५९ ॥  
इति श्रीब्रह्मवैवर्त्ते महापुराणे द्वितीये प्रकृतिखण्डे  
पञ्चपञ्चाशत्तमाध्यायान्तर्गतं राधापरीहारस्तोत्रं  
समाप्तम् ।  
ब्रह्मवैवर्तपुराण । प्रकृतिखण्ड । अध्याय ५५/४७-५९ ॥

brahmavaivartapurANa . prakRRitikhaNDa . adhyAya 55/47-59..

Proofread by PSA Easwaran

---

——  
*Radhaparihara Stotram*

pdf was typeset on March 5, 2025

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

